दुनियाभर में बनने वाली आइस्क्रीम में लगभग 40 प्रतिशत भाग वनीला फ्लेवर का होता है

बिना खटपट किये एक ही झटके में हजारो में बिकने वाली, वनीला की खेती कर बने धन्नासेठ, जानिए वनीला की खेती के बारे में

देश का किसान कई प्रकार की सब्जी, फल, फूल और औषधीय फसलों की खेती करता है। ऐसे ही आज हम किसानों को एक ऐसी फसल की जानकारी देने वाले हैं, जिसकी खेती से किसान अच्छी कमाई कर सकता है। हम यहां वनीला की बात कर रहे हैं, जिसकी खेती मोटी कमाई करने का एक बेहतरीन विकल्प है।

इसके फलों का आकार कैप्सूल की तरह होता है। इसका इस्तेमाल केक, परफ्यूम और अन्य ब्यूटी प्रोडक्ट्स बनाने में किए जाते हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक एक एकड़ खेत में वनीला की 2400 से 2500 बेल लगती हैं। बाजार में इन बीजों को 50 हजार रुपये प्रति किलो तक में बेचा जाता है। जमीन की गिरती गुणवत्ता के चलते पारंपरिक फसलों से किसानों को भारी नुकसान हो रहा है। ऐसे में ज्यादातर किसान कम मेहनत और लागत में ज्यादा मुनाफा देने वाली फसलों का चुनाव कर रहे हैं। वनीला की खेती की तरफ किसान बेहद तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। बता दें कि 50 हजार रुपये किलो बिकने वाली ये फसल किसानों को कम समय में अमीर बना सकती है।

किसान शेड हाउस में ये फसल लगाकर हो जाएंगे मालामाल, ये है खेती करने का तरीका

ध्यान रखें कि जहां भी आप वनीला की खेती कर रहे हैं, वह जगह छायादार हो। शेड हाउस बनाकर इसकी खेती करने से उपज कई गुना बढ़ सकती है। इसके अलावा बड़े पेड़ों के बीच भी इसकी खेती की जा सकती है। वनीला की फसल 3 वर्ष में उपज देनी शुरू कर देती है। कई देशों में वनीला की मांग होती है। भारतीय मसाला बोर्ड की रिपोर्ट भी बताती है कि दुनियाभर में बनने वाली आइस्क्रीम में लगभग 40 प्रतिशत भाग वनीला फ्लेवर का होता है। इसके अलावा केक, कोल्ड ड्रिंक, परफ्यूम

और दूसरे ब्यूटी प्रोडक्ट्स में उपयोग किया जाता है। ऐसे में किसान इसकी खेती से बेहतर मुनाफा कमा सकते हैं।

कई देशों में वनीला की मांग होती है। भारतीय मसाला बोर्ड की रिपोर्ट भी बताती है कि दुनियाभर में बनने वाली आइस्क्रीम में लगभग 40 प्रतिशत भाग वनीला फ्लेवर का होता है। इसके अलावा केक, कोल्ड ड्रिंक, परफ्यूम और दूसरे ब्यूटी प्रोडक्ट्स में उपयोग किया जाता है। ऐसे में किसान इसकी खेती से बेहतर मुनाफा कमा सकते हैं।

फल से मिलते हैं बीज: वनीला को ऑर्किड परिवार का सदस्य माना जाता है। यह एक बेल पौधा है, जिसका तना लंबा और बेलनकार होता है। इसके फल के साथ फूल भी बहुत सुगंधित होते हैं, जो कैप्सूल की तरह दिखते हैं। खास बात है कि इसके एक फल से ढेरों बीज प्राप्त होते हैं।

स्वास्थ्य के लिए भी फायदेमंद

वनीला की बींस में एक वनीलिन नामक सक्रिय रासायनिक तत्व मौजूद होता है। यह शरीर में मौजूद बैड कोलेस्ट्रोल से लड़ता है और गुड कोलेस्ट्रोल को बढ़ाता है। कैंसर जैसे रोगों के भी खिलाफ इसके फल और बीज बेहद प्रभावी माने जाते हैं। साथ ही, पेट को साफ रखने, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने और जुखाम, बुखार जैसी छोटी बीमारियों के खिलाफ भी ये फायदेमंद है।

बढ़िया मुनाफा: विशेषज्ञों के मुताबिक, एक एकड़ खेत में वनीला की 2400 से 2500 बेल लगती हैं। बेल में जब फूल-फलियां पकने लगती हैं तो पौधों से बीजों को निकालने की प्रकिया शुरू कर दी जाती है। इन बीजों को अलग-अलग प्रोसेसिंग से होकर गुजारा जाता है। फिर इन बीजों को 50 हजार रुपये प्रति किलो तक में बेचा जाता है।

बीज की कीमत: हमारे देश में वनीला के 1 किलो बीजों की कीमत लगभग 40 से 50 हजार रुपए है।

वनीला की खेती से जुड़ी खास जानकारी

वनीला की खेती को झूमिडिटी, छाया और मध्यम तापमान (25 से 35 डिग्री सेलसियस तक) की आवश्यकता पड़ती है। सही तापमान पर इसकी पैदावार अच्छी प्राप्त होती है। इस तरह का वातावरण शेड हाउस बना सकते हैं। वहां इसकी खेती आसानी से हो सकती है। इसमें आप फव्वारा सिंचाई विधि को अपना सकते हैं। अगर खेत में कई पेड़ या बाग हैं, तो इसकी खेती सहफसली तौर पर की जा सकती है। यह फसल लगभग 3 साल बाद पैदावार देने लगती है।

वनीला के लिए उपयुक्त मिट्टी: इसकी खेती में मिट्टी भुरभुरी और जैविक पदार्थों से भरपूर होनी चाहिए, जिसका पीएच मान लगभग 6.5 से 7.5 तक हो। अगर आप मिट्टी जांच करने के बाद वनीला लगाते हैं, तो यह फसल की पैदावार के लिए अच्छा माना जाता है।

किस तरह होती है इसकी बुवाई

इसकी खेती के लिए भुरभुरी मिट्टी बेहद उपयुक्त मानी जाती है। भूमि का क्ष॥। मान 6.5 से 7.5 के बीच होना आवश्यक है। इसके बीजों की बुवाई दो तरह से की जा सकती है। इसमें पहला तरीका कटिंग और दूसरा बीजीय विधि है। वनीला की खेती में बुवाई दो प्रकार से होती है। पहला कटिंग और दूसरा बीज। बता दें कि इसके बीजों का उपयोग कम किया जाता है, क्योंकि इसके दाने छोटे होते हैं, जिसको उगने में काफी समय लग जाता है। ऐसे में बेल लगाना अच्छी रहता है। ध्यान दें कि बेल की पहले स्वस्थ कटिंग कर लें। इसके बाद जब वातावरण में नमी हो, तो इसकी कटिंग को लगा दें।

खेत की तैयारी: वनीला की बुवाई से पहले खेत में गड्ढे बना लें। इसमें सड़ी गली खाद डाल दें। ध्यान दें कि कटिंग को मिट्टी में नहीं दबाना है, बल्कि सतह के ऊपर बस थोड़ी सी खाद और पत्तों से ढक दें। बता दें कि कटिंग की दूरी लगभग 8 फिट होनी चाहिए, क्योंकि इसका पौधा लतादार होता है। इसके बाद पेड़ के साथ 7 फिट की लंबी लकड़ी या सीमेंट के पिलर लगाए जाते हैं। इसको तार से बांधा जाता है, ताकि बेल आसानी से फैल पाए।

वनीला लगाने के बाद के कार्य:

- वनीला के खेत में गोबर से तैयार खाद, केंचुए की खाद, नीम केक आदि डालते रहना है।
- फव्वारा विधि या टपक विधि से 2 दिन के अंतराल पर पानी देना है।
- इसके अलावा लगभग 1 किलो एनपीके को 100 लीटर पानी में घोलकर छिड़कना है।

वनीला की बेलों को तारों के ऊपर फैलाना है। ध्यान रहे कि इसकी ऊंचाई 150 सेमी से अधिक न हो।

आपको बता दें कि वनीला के फूल से लेकर फलियां पकने में लगभग 9 से 10 महीने का वक्त लगता है। इसके बाद बीजों को निकालकर उसका प्रसंस्करण कर कई तरह के खाद्य पदार्थों में इस्तेमाल करते हैं। आधुनिक दौर में किसानों के लिए इसकी खेती एक बेहतर विकल्प है।

डॉ. आर. महेंद्रन देश के सबसे बड़े वनीला निर्यातक

आर महेंद्रन कोयंबटूर के रहने वाले हैं। वह पहले एक डॉक्टर थे। बाद में वे एक किसान बन गए और वनीला की खेती करने लगे। पिछले दिनों वह तब सुर्खियों में छा गए थे जब कमल हसन की पार्टी एमएनएम में शामिल हुए। मास्टर्स इन मेडिसिन (एमडी) करने के बाद वह 1990 में उन्होंने वनीला की खेती करने का फैसला किया। आज वे देश के सबसे बड़े वनीला निर्यातक हैं। उनका मानना है कि सबसे ज्यादा जरूरी है, क्या आप कृषि उत्पाद को प्रोडक्ट के रूप में बेचने में सक्षम हैं या नहीं। वर्तमान में उनकी कंपनी के लिए केवल कर्नाटक से 1000 से ज्यादा वनीला के किसान काम कर रहे हैं।

भारत में वनीला का उत्पादन

वर्तमान समय में भारत के किसान वनीला की खेती लघु और सीमांत फसलों के साथ कर रहे हैं। कुछ समय पहले देश के केरल राज्य के एर्णाकुलम जिले में वनीला का उत्पादन अधिक मात्रा में किया जाता था। वनीला की खेती कर चुके एम.के. साजू का कहना है, कि एक समय ऐसा था, जब 2 लाख तक किसान केवल वनीला की खेती से जुड़े थे। किन्तु अब यह संख्या सिमट कर 100 से भी कम बची हैं। वनीला कंपनी के अनुसार वनीला की खेती में आने वाली कमी के पीछे का सबसे बड़ा कारण सिंथेटिक वनीला

का प्राकृतिक वनीला का स्थान ले लेना है। सिंथेटिक वनीला प्राकृतिक वनीला की तुलना में काफी सस्ता होता है, जिस वजह से प्राकृतिक वनीला के अच्छे दाम नहीं मिल पाते हैं, और किसानों को नुकसान उठाना पड़ता है। प्राकृतिक वनीला के मूल्य की बात करें तो इसकी कीमत 20 हजार रूपए प्रति किलो तक पाई जाती है, वही सिंथेटिक वनीला हमें केवल 100 रूपए में ही मिल जाता है। यदि एक बड़ी वजह है, कि वनीला देश में वनीला की खेती पर काफी असर पड़ा है।

विश्व में वनीला की खेती :वनीला मुख्य रूप से ग्वाटेमाला, मध्य अमेरिका और दक्षिण पूर्वी मेक्सिको मूल का पौधा कहलाता है। इसके अलावा जंजीबार, टांगो, वेस्टइंडीज, जावा, युगांडा, मेडागास्कर, ताहिती और जमैका देशो में भी वनीला की खेती करते है।